ॐ जय जगदीश हरे आरती (Aarti: Om Jai Jagdish Hare)

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे ।

भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करे ॥

॥ ॐ जय जगदीश हरे..॥

जो ध्यावे फल पावे, दुःख विनसे मन का,

स्वामी दुःख विनसे मन का ।

सुख सम्पति घर आवे, कष्ट मिटे तन का ॥

॥ ॐ जय जगदीश हरे..॥

मात पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी,

स्वामी शरण गहूँ मैं किसकी ।

तुम बिन और न दूजा, आस करूं मैं जिसकी ॥

॥ ॐ जय जगदीश हरे..॥

तुम पूरन परमात्मा, तुम अन्तर्यामी,

स्वामी तुम अन्तर्यामी ।

पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सब के स्वामी ॥

॥ ॐ जय जगदीश हरे..॥

तुम करुणा के सागर, तुम पालनकर्ता,

स्वामी तुम पालनकर्ता ।

मैं मूरख खलकामी, कृपा करो भर्ता॥

॥ ॐ जय जगदीश हरे..॥

तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति,

स्वामी सबके प्राणपति ।

किस विधि मिलूं दयामय, तुमको मैं कुमति ॥

॥ ॐ जय जगदीश हरे..॥

दीन-बन्धु दुःख-हर्ता, ठाकुर तुम मेरे,

स्वामी रक्षक तुम मेरे ।

अपने हाथ उठाओ द्वार पड़ा तेरे ॥

॥ ॐ जय जगदीश हरे..॥

विषय-विकार मिटाओ, पाप हरो देवा,

स्वामी कष्ट हरो देवा ।

श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा ॥

॥ ॐ जय जगदीश हरे..॥

श्री जगदीश जी की आरती जो कोई नर गावे।

स्वामी जो कोई नर गावे।

कहत शिवानंद स्वामी, सुख संपत्ति पावे ॥

॥ ॐ जय जगदीश हरे..॥